आज की बात

आज मेने सुबह उठ कर टहलने गया तो मेने देखा की मेरे मोहल्ले के लड़के दोड़ रहे थे। मेने उनसे पूछा तो उनने बोला की अरुण आजाओ हमारे साथ दोड़ो। मेने बोला की नही में नही दोड़ सकता क्योंकि मेरी सरीर पूरे जकड़ गए है तो उनोने बोला की हमारे सरीर में भी पुरी तरीखा से जकड़ गए थे तो हमने सोचा की चलो हम दोड़ लगाकर देखे तो क्या फयदा होता है।

अरुण, सातवीं, कोटमी, ज़िला बैतूल, मध्य प्रदेश

विजेन्द्र सिंग व अजय रेकवाल, छठवीं, मानकुंड, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

ममलेश, छठवीं, महुखेड़ा, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

क्या आप समझते है ये बिल्ली मोसी क्या खाती है। ये बिल्ली मोसी उदरा को खा जाती है और दूध पि जाती है और कुत्ते बिल्ली के पुछे भागते है।

रोहित वर्मा व लखन पिपलोदिया, आठवीं,
शिवपुर मुण्डला, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

हमारे यहाँ एक हाट लगता है। हम उस हाट में जाते हैं। हमें अच्छी-अच्छी चीज़ें मिलती हैं। उसमें से अच्छी-अच्छी चीज़ें लाते हैं। हमें इस हाट में जाना अच्छा लगता है। हमें स्कूल अच्छी लगती है। हमारे यहाँ कुल सदस्य पाँच हैं। मुझे मेरी सहेलियाँ बहुत अच्छी लगती हैं। हमें सामान नेवरी लेने जाना पड़ता है। हमें खोआ अच्छा लगता है। हमें पढ़ना भी अच्छा लगता है।

पूजा, सातवीं, धानीघाटी, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

यह हमारा स्कूल है। इसमें हम पढ़ने आते है। कल हम क्रिकेट खेले दो टीमे थी। पहली टीम खेलने आई है, हमारी टीम का कप्तान था। पहली टीम मे मनीष व चन्द्रपाल खेलने आए उन्होने 50 रन बनाये और आउट हो गए। 150 रन पर उनकी टीम अलाउट हो गई। अब हमारी टीम खेलने आई और पहले दो लड़के खेले। 20 रन पर सतीश आउट हो गया, अब मे खेलने गया, 100 रन पर आउट हो गया और दूसरा लड़का खेलने आया और 20 आवर में हमने 140 रन बना लिए। उसके बाद हमारी टीम जीतने में 10 रन की जरूरत थी, और तब अंकित ने एक छक्का लगा दिया और हमारे रन 146 हो गए। तभी अंकित ने एक छक्का लगाया और हमारी जीत हो गई।

सतीश व चन्द्रपाल, सातवीं, बोरखेड़ा पूरबिया, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

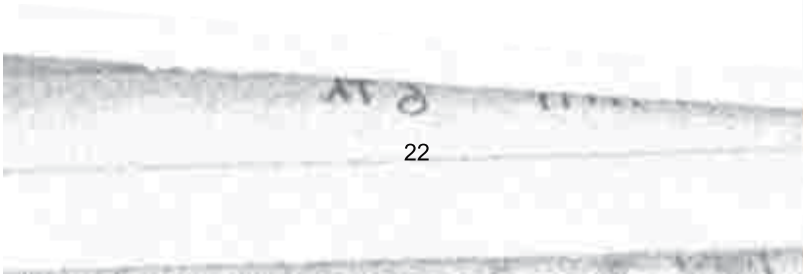

झँमकुड़ी

झँमकुड़ी गाँव में रहती है। झँमकुड़ी नाचती है। झँमकुड़ी बहुत अमीर है। उसके पास एरोप्लेन है। झँमकुड़ी स्कुल जाती है। झँमकुड़ी 9 वी कीलास में पड़ती है।

अर्जुन पारग्या, सातवीं, बोरखेड़ा पूरबिया,
ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

एक चिड़ियाँ थी। वो एक दिन घूमने गई उसने एक जंगल देखा। जंगल में कुछ नही उगा था। वह सोचने लगी कि जंगल में कुछ नही है मैं अब क्या खाऊँगी। वो आगे गई तो गुलाब का एक फूल दिखा वह उस पर बैठ गई और सोचने लगी कितना सुन्दर फूल है लेकिन मैं इसे खा नहीं पाऊँगी। मेरी भूख का क्या होगा? फिर उसे एक झोपड़ी दिखी झोपड़ी के आस-पास दाने गिरे थे तो फिर उसको दाने दिखाई दिए। दाने बहुत सारे थे लेकिन उसने सोचा इतने सारे दाने में कैसे ले जा पाऊँगी? फिर दिमाग में आया तो एक बीज उठाकर जंगल में ले गई फिर एक गढ़ढा दिखा तो वहाँ उसने दाना डालकर मूँद दिया। एक हफ्ते बाद वहाँ जाकर देखा तो पेड़ उग गया, फिर वही उसने घर बना लिया। वो सोचने लगी घर तो बना लिया पर भूख का क्या करूँ? उसने दो चार दिन पानी पीकर गुज़ारा किया। वह सोचने लगी जंगल में कोई भी पशु-पक्षी आयेगे तो भूखा नहीं रहेगा। फिर रहते ही रहते बहुत दिन हो गए चिड़िया के बहुत सारे दोस्त बन गए। उसके दोस्तों ने कहा आप इतने दुबले क्यों हो? उसने कहा बहुत दिन हुए मुझे खाना नहीं मिला। उन्होंने कहा आप हमारे घर चलो हम आपको खाना खिलाएँगे आपकी भूख मिट जाएगी।

कक्षा सातवीं, कोटमी, ज़िला बैतूल, मध्य प्रदेश
के बच्चों द्वारा बनाई गई सामूहिक कहानी।

सोनी लोधी, छठवीं, नेवरी, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

यह एक घर है। घर बहुत सुन्दर है। उसमें एक लड़की खड़ी है। वह एक नारियल का पेड़ है। घर के पास एक जाली है। उसमें एक पेड़ लगा है। घर के पास एक दुकान है। दुकान में तरह-तरह की चीजें हैं। वह दुकानदार बहुत खड़ुस है।

रचना व चित्रः राखी, सातवीं, मुँजाखेड़ी, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

हमारे गाँव में एक शेर आया था। वह एक बकरी को खा गया था। गाँव वालों ने बहुत कोशिश की पर शेर नहीं भागा। दूसरे दिन एक गाय को खा गया था।

पूजा कुमारी, छठवीं, घटिया गयासुर, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

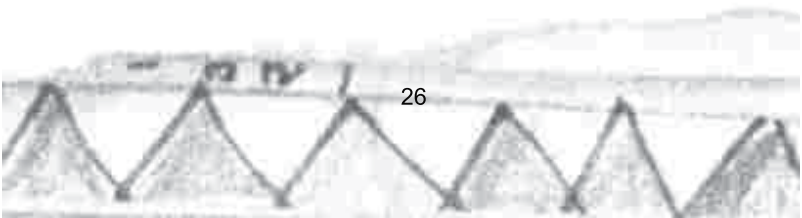

सुरेन्द्र बारस्कर, छठवीं, काँटावाड़ी,
ज़िला बैतूल, मध्य प्रदेश

मै गर्मी की छूट्टी मे काम करने गया। मै बस मे था बस मे बहूत भीड़ थी। मुझे चक्कर और उलटी आने लगी। तभी मेरे साथ मेरे साथी थे। मुझे दरवाजे के पास जाने के लिए कहा। मे दिरे-दिरे दरवाजे के पास गया। मै दरवाजे के पास खड़ा रहा। तभी मोटर स्टेन आ गया। हमने वह पर नाश्ता किया और गाँव मे चले गए। गाँव मे जाते ही काम करने लग गए। एक दिन वह पर हमारा ठेकेदार आ गया। तभी उसने पूछा काम अच्छा चल रहा है। हमने कहा कि अच्छा चल रहा है।

बालकृष्ण, सातवीं, धानीघाटी, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

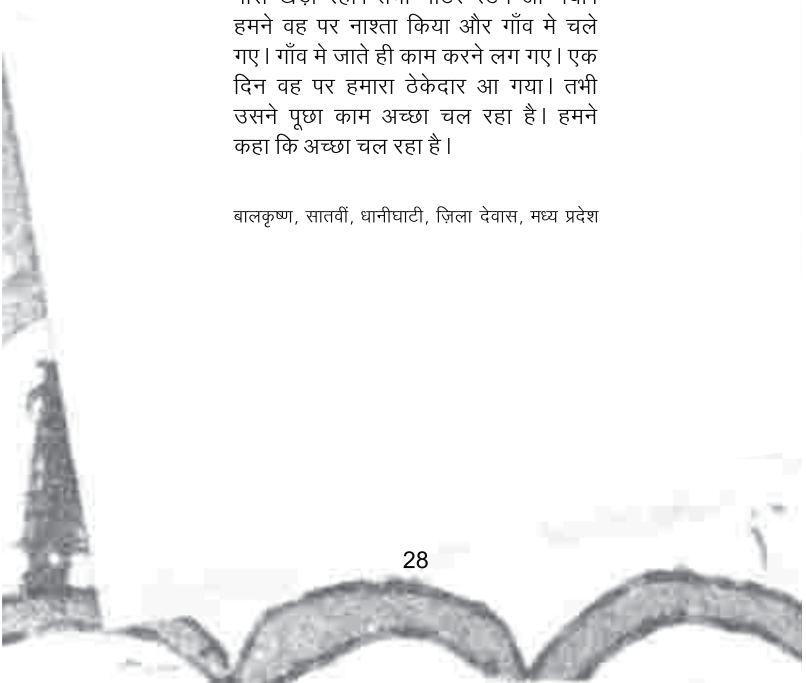

रमकुड़ी

रमकुड़ी बहुती गरीब है। उसके पास एक मटका है। ये पानी भरने जा रही है। ये गाँव गाँव जाती है और नाचती है रुपया कमाने के लिए। और इसमे बहुत दिमाग है। घर का पेट भरती है।

रचना व चित्रः महेन्द्र पिपलोदिया, आठवीं, शिवपुर मुण्डला,
ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

कयामत मंसूरी, सातवीं, महुखेड़ा, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

इस संकलन के बारे में...

एकलव्य के स्कूली व स्कूल के बाहर, समुदाय में संचालित शैक्षिक कार्यक्रमों में हमेशा से ही पुस्तकालय एक महत्वपूर्ण अंग रहा है। पुस्तकालय जहाँ बच्चे या बड़े किताबें व पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ें, चर्चाओं और कई अन्य रचनात्मक गतिविधियों में भाग लें। इसी क्रम में दो वर्ष पहले जब शासकीय माध्यमिक शालाओं में पुस्तकालय एवं गतिविधि कार्यक्रम शुरू किया गया तो उद्देश्य यह था कि पुस्तकालयों के ज़रिए बच्चों में न केवल पढ़ने की आदत को विकसित किया जाए बल्कि उन्हें देश-दुनिया के अच्छे साहित्य से परिचित करवाया जाए और उनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति और भाषाई कौशल को प्रोत्साहित भी किया जाए।

पुस्तकालय एवं गतिविधि कार्यक्रम ने अनुभव लेखन और चित्रकला के द्वारा लेखन को सशक्त बनाने का प्रयास किया। प्रारम्भिक दौर में जब बच्चे पुस्तकालयों से जुड़े तो उनका लेखन काफी कमज़ोर था। इसलिए पढ़ी गई किताबों पर लिखित प्रतिक्रिया देना, आसपास के परिवेश से जुड़े अनुभवों को दीवार अखबार में दर्ज करना, अपने बनाए हुए चित्रों के बारे में लिखना जैसी कई गतिविधियों को जगह दी गई। जब भी बच्चे अपने बनाए हुए चित्र हमें दिखाते तो हम उन्हें कहते कि जिस सोच के साथ चित्र को बनाया है, उसी पर दो-चार लाइनें भी लिख दो तो बढ़िया हो जाए। बच्चे दो-चार लाइनें लिखने लगे। फिर ये लाइनें पैराग्राफ में बदलीं और फिर आधे-पूरे पन्नों में।

हमने बच्चों को रोज़मर्रा के जीवन के अनुभवों, जैसे खेती-किसानी की समस्याएँ, परिवार की समस्याएँ, शादी-ब्याह, गर्मी की छुट्टियाँ, घरेलू कामकाज, त्यौहार, घूमना-फिरना तथा लड़के-लड़कियों द्वारा किए जाने वाले कामों आदि के बारे में भी लिखने को कहा। इससे बच्चे केवल एक विषय में नहीं बँधे बल्कि हर विषय पर सोच-समझ सके और अपने परिवेश को, आसपास की घटनाओं को ज़्यादा गौर से देखने लगे। हमने शुरू से इस बात का खास खयाल रखा कि बच्चे ने चाहे जिस भी तरह से लिखा हो, उसमें गलतियाँ न निकालकर उसे प्रोत्साहित किया जाए। सकारात्मक सुझाव लगातार दिए जिससे लेखन में रोचकता और मज़ा बना रहे।

जब भी हम स्कूल में कदम रखते, बच्चे पहले से ही हमारी राह तकते मिलते। पहले से लिखी हुई अपनी ढेर सारी रचनाएँ और चित्र हमें लाकर देते। कुछ स्कूलों में बच्चे इस कदर उत्साहित थे कि उन्होंने लेखों और चित्रों को रखने के लिए बड़े खोकों को जुगाड़कर पेटियाँ बना ली थीं। दीवार अखबार में रचनाओं या चित्रों का आना बच्चों को बहुत जोश दिलाता, उन्हें लगता कि उनकी लेखनी या चित्र की अहमियत है और वे एक महत्वपूर्ण काम कर रहे हैं।

प्रत्येक बच्चा अपने आप में खास होता है और हर बच्चा दूसरे से अलग भी होता है। यहाँ तक कि उसकी अभिव्यक्ति का तरीका भी दूसरे से जुदा होता है। बच्चों में अपने आसपास की चीज़ों को गहराई से देखने की क्षमता होती है और वे शब्दों के माध्यम से उनका खूब बारीकी से दृश्य भी खींचते हैं। इस सहज बाल प्रवृत्ति को बढ़ावा तभी मिलता है जब उन्हें आज़ादी मिले अपने तरीके से सोचने, लिखने, चित्र बनाने की; रोकटोक या सही-गलत के दबाव के बिना अपनी कलम या कूची को चलाने की।

पुस्तकालय एवं गतिविधि कार्यक्रम में बच्चों को अपनी बात कहने का, भाषा को अपनी तरह से खुलकर प्रयोग करने का मौका मिला। इससे बच्चों की रचनाओं की संख्या लगातार बढ़ती रही, बढ़ती रही। दीवार अखबार में रचनाएँ और चित्र तो जगह पा ही रहे थे पर सामग्री के नन्हे पहाड़ों और बच्चों के बढ़ते उत्साह को देखते हुए हस्तलिखित पत्रिकाओं को निकालने का विचार जन्मा। और शुरुआत हुई *टेमरु* से। (टेमरु नाम बच्चों ने चुना था। टेमरु तेंदु (तेंदुपत्ता) के फल का नाम है।) फिर इस सिलसिले में *आवाज़, अजब गजब, बच्चों की दुनिया, दोस्ती, एक नजर, गुलदस्ता, नंदन, सब की शान*...नामक हस्तलिखित पत्रिकाएँ भी जुड़ गईं। इनमें प्रत्येक स्कूल के कई सारे बच्चों की रचनाओं को जगह मिली। *चकमक* में भी चुनिन्दा रचनाएँ प्रकाशित होती रहीं।

बच्चों की इन रचनाओं में साफगोई है और बिना लाग-लपेट के कहने का अन्दाज़ भी। जब इन सभी हस्तलिखित पत्रिकाओं को एक साथ देखा गया तो इनमें बच्चों के दृष्टिकोण से चित्रित ग्रामीण जीवन की एक गज़ब की झलक दिखाई पड़ी और इस तरह इस संकलन की भूमिका बनी। इसमें माध्यमिक कक्षाओं के उन बच्चों के चित्र और रचनाएँ शामिल हैं जो पुस्तकालय एवं गतिविधि कार्यक्रम से जुड़े हैं। रचनाओं के चयन में इस बात का ध्यान रखा गया है कि उनमें मौलिकता और विषय की विविधता हो। साथ ही कहानी कहने की शैली में भी अलग-अलग तरह के स्वाद का मज़ा आए। लीजिए, *टेमरु* आपके सामने है, किताब की शक्ल में...

पुस्तकालय एवं गतिविधि कार्यक्रम,
एकलव्य

बादल, छठवीं, धानीघाटी,
ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

एकलव्य

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य की गतिविधियाँ स्कूल में व स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में हैं।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य ऐसी शिक्षा का विकास करना है जो बच्चे से व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो; जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। अपने काम के दौरान हमने पाया है कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं जब बच्चों को स्कूली समय के बाद, स्कूल से बाहर और घर में भी, रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों। किताबें तथा पत्रिकाएँ इन साधनों का एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। बच्चों की पत्रिका *चकमक* के अलावा *स्रोत* (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स) तथा *शैक्षणिक संदर्भ* (शैक्षिक पत्रिका) हमारे नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान एवं बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ, सामग्री आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की हैं।

वर्तमान में एकलव्य मध्य प्रदेश में भोपाल, होशंगाबाद, पिपरिया, हरदा, देवास, इन्दौर, उज्जैन, शाहपुर (बैतूल) व परासिया (छिन्दवाड़ा) में स्थित कार्यालयों के माध्यम से कार्यरत है।

इस किताब की सामग्री एवं सज्जा पर आपके सुझावों का स्वागत है। इससे आगामी किताबों को अधिक आकर्षक, रुचिकर एवं उपयोगी बनाने में हमें मदद मिलेगी।

सम्पर्क: books@eklavya.in
ई-10, शंकर नगर बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर,
भोपाल - 462016

बच्चे बड़ों जैसे नहीं होते। वे अपनी तरह के लोग होते हैं। वे न तो बड़ों की तरह सोचते हैं, न बड़ों की तरह बोलते हैं, न बड़ों की तरह लिखते हैं, न बड़ों जैसे चित्र बनाते हैं। वे दुनिया को अपनी ही तरह से देखते हैं और अपनी रचनाओं में उसे इस ढंग से प्रस्तुत करते हैं कि बड़े उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। उन रचनाओं को पढ़-देखकर बड़े लोग सिर्फ अचम्भित हो सकते हैं। या फिर अगर वे चाहें तो वे भी, बच्चों की ही तरह, उन्हें पढ़ने-देखने का मज़ा लूट सकते हैं।

इस किताब में बच्चों की ऐसी ही रचनाएँ हैं, और वे बच्चों और बड़ों, दोनों के लिए हैं।